ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 8, August 2019

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की 'राम की शक्ति पूजा' का उद्देश्य एवं निहित संदेश

Gurmit Singh

Associate Professor in Dept. of Hindi, Govt. College, Bundi, Rajasthan, India

सार

निराला की राम की शक्ति पूजा अंधकार से होकर प्रकाश में आने की कविता है। यहाँ कवि निराला ने अतीत वर्तमान एवं भविष्य को एक साथ जीता है। 1936 में कवि निराला ने "राम की शक्ति पूजा" कविता लिखी ! इस कविता में बाहर-भीतर एक टकराहट है जिसके फेनिल शोर में अलौकिकता एवं मानवीयता, पौराणिकता एवं आधुनिकता आदि के स्वर घुलमिल गए है। निराला की राम की शक्ति पूजा अंधकार से होकर प्रकाश में आने की कविता है। यहाँ कवि निराला ने अतीत वर्तमान एवं भविष्य को एक साथ जीता है। 1936 में कवि निराला ने "राम की शक्ति पूजा" कविता लिखी ! इस कविता में बाहर-भीतर एक टकराहट है जिसके फेनिल शोर में अलौकिकता एवं मानवीयता, पौराणिकता एवं आधुनिकता आदि के स्वर घुलमिल गए है। कवि निराला की यह कविता सर्वश्रेष्ठ हिन्दी की कविताओं में से एक है। राम कथा इस देश की सबसे लोकप्रिय कथा है। यह कविता "रवि हुआ अस्त" से शुरू हुई है। कवि पहले ही संकेत दे देता है कि राम-रावण के युद्ध का वर्णन करना इस कविता में उसका उद्देश्य नहीं है और न ही इस युद्ध के बहाने कोई लंका काण्ड रचना है। दूसरी बात यह की राम सूर्य वंशी हैं। कवि शुरू में ही सूर्य का अस्त दिखाकर यह संकेत देता है कि राम जिस लड़ाई में कूद पड़े हैं वह लड़ाई वे किसी वंश परम्परा की ताकत से नहीं जीतेंगें। और न ही अपनी पूर्वजों की अर्जित ताकत इस लड़ाई में उनकी मदद करेगी।

परिचय

यह युद्ध सामान्य युद्ध नहीं है। यह राम-रावण का युद्ध उतना नहीं जितना यह रामत्व और रावणत्व के बीच का युद्ध है। हर युग में रावणत्व के खिलाफ राम संघर्ष करता है। रावणत्व बार-बार पराजित होता है तथा हर नए युग में वह फिर सर उठाता है। कवि का कहना है कि रावणत्व एवं रामत्व के बीच होने वाला युद्ध कभी खत्म नहीं हुआ यह युद्ध अपराजेय और निरंतर है। इस युद्ध में राम की चिंता का सबसे बड़ा कारण है "अन्याय जिधर है [1]उधर शक्ति" यहीं चिंता निराला के युग की भी चिंता थी और आज तो यह चिंता कुछ अधिक ही प्रासंगिक है। आज जो लोग दिन रात पसीने से भीगे हुए है उनको आज जीवन की मूलभूत सुविधा भी मयस्सर नहीं है और जो जितना ही कपटी छली है वो दिन दूना रात चौगूना फल फूल रहा है। [2]

इस कविता का सार निराला ने यह बताया कि एक दिन राम रावण युद्ध अनवरत जारी था। युद्ध भूमि में राम का रण कौशल क्षीण हो रहा था। वो जो भी बाण चलाते वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता। तब राम युद्ध भूमि में दिव्य दृष्टि से देखे की वास्तव में आज क्या कारण है कि आज युद्ध में मेरा प्रभाव क्षीण हो रहा है। तो उन्होंने देखा कि ओह आज तो साक्षात दुर्गा[3] (शक्ति) रावण के रथ पर आरूढ़ है। तब राम किसी भी तरह युद्ध की आचार संहिता अर्थात् सूर्यास्त तक इंतजार किए। युद्ध से लौटकर जब उस दिन राम रात्रि विश्राम के समय अपने सेना नायकों के साथ शिला पट्टा पर बैठे थे तो पहली बार उनके नेत्र से आंसू गिरे। इस घटना से आहत होकर जाम्वंत [4]ने पूछा प्रभु क्या बात है आज आपके नेत्र से आँसू। इस पर राम ने मात्र इतना ही बोला की अब ये युद्ध मैं जीत नहीं पाऊगाँ। जब पूरी सृष्टि जानती है कि मैं सत्य की रक्षा के लिए युद्धरत हूँ तो फिर शक्ति को मेरे साथ होना चाहिए। आज दुर्गा अन्यायी के साथ है। "जिधर अन्याय शक्ति उधर"[5]

यही मेरे आत्मीय कष्ट का कारण है। अन्यायी शक्तियाँ काफी संगठित है सबसे मूल बात यह है कि डर उनकी सबलता के कारण नहीं बल्कि मूल्यपरस्त शक्ति के उनसे हाथ मिलाने के कारण है। राम कहते है नैतिक मूल्यों की समझ पर यह गहरी चोट है। हर संक्रातिकालीन युग में सात्विक विवेक को यह सनातन चोट इसी तरह कचोटती है। राम की व्यथा मानव मन की पहचानी हुई व्यथा है।[6]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 8, August 2019

"रावण अधर्मरत भी, अपना मैं हुआ ऊपर" इस व्यथा को विभिषण समझ नहीं पाते मगर जाम्वन्त तुरंत समझ जाते है वे राम को सलाह देते है:-

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर, शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन" आराधन वैयक्तिक लाभ-अर्जन की प्रक्रिया है रावण इसी से जुड़ा है इसके प्रत्युत्तर में दृढ़ आराधन बाह्य शक्ति से आंतरिक शक्ति के संतुलन की प्रक्रिया है। और यह तभी संभव है जब राम इस लड़ाई को व्यक्तिगत हानि-लाभ से ऊपर उठकर पूरे जगत के लिए लड़े। अर्थात् आराधन व्यक्ति परक है और दृढ़ आराधन लोक मंगल परक और इस दृढ़ आराधन से ही शक्ति का मौलिक उद्रेक होगा। रामायण और महाभारत की युद्ध की भयंकरता पर दृष्टिपात करे तो रामयण का युद्ध महाभारत से सौ गुना भयंकर था पूरे महाभारत के युद्ध में मात्र दो बार ही व्यूह रचना हुई है। जबकि रामायण में हर कुछेक पहर पर व्यूह रचना होती थी। एक पहर तीन घंटे का होता है। शक्ति की मौलिक कल्पना नवीन सर्जनात्मकता की खोज है इसका स्वरूप भौतिक की अपेक्षा नैतिक अधिक है। यह परम्परागत शक्ति के पुनः प्रयोग से नहीं, उसके निषेध से संभव होगी, तभी तो राम के चौकन्नेपन के बावजूद प्रजापतियों के संयम से रक्षित सारे दिव्याषस्त्र रण में श्रीहत, खंडित हो जाते हैं।[7] शक्ति की उनकी मौलिक कल्पना में मानव कल्याण की सामूहिक गंध बसी है। राम दुर्गा के 'जन रंजन-चरण-कमल-तल' स्थित सिंह की तरह आराधना शुरू करके यह प्रमाणित करते हैं। राम की शक्ति पूजा में यह मौलिक शक्ति आत्मान्वेषण से उपलब्ध हुई है।[8]

राम योग द्वारा मन को ऊपर उठाते हैं तथा उसे गगन मंडल में जाते है। यह आत्मान्वेषण की क्रिया है। दूसरी बात, शक्ति का मौलिक स्वरूप प्रकृति में व्याप्त है। दुर्गा रूप में समग्र प्रकृति-क्षिति जल, पावक, गगन समीर को साधकर ही राम नवीन पुरूषोत्तम बनते हैं। मर्यादा पुरूोषोत्तम में रूढ़ियों का आग्रह कुछ अधिक था। नवीन पुरूषोत्तम रूढ़ियों से मुक्त, लोक न्याय पर दृढ़ एवं मौलिकता से लैस होंगे।[9]

विचार-विमर्श

राम की शक्तिपूजा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित [1] काव्य है। निराला जी ने इसका सृजन २३ अक्टूबर १९३६ को सम्पूर्ण किया था। कहा जाता है कि इलाहाबाद(प्रयागराज) से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था। इसका मूल निराला के कविता संग्रह 'अनामिका' के प्रथम संस्करण में छपा।[10]

यह कविता ३१२ पंक्तियों की एक ऐसी लम्बी कविता है, जिसमें निराला जी के स्वरचित छंद 'शक्ति पूजा' का प्रयोग किया गया है। चूँकि यह एक कथात्मक कविता है, इसलिए संश्लिष्ट होने के बावजूद इसकी सरचना अपेक्षाकृत सरल है। इस कविता का कथानक प्राचीन काल से सर्वविख्यात रामकथा के एक अंश से है। इस कविता पर वाल्मीकि रामायण और तुलसी के रामचरितमानस से कहीं अधिक बांग्ला के कृतिवास रामायण का प्रभाव देखा जाता है। किन्तु कृतिवास और राम की शक्ति पूजा में पर्याप्त भेद है। पहला तो यह की एक ओर जहां कृतिवास में कथा पौराणिकता से युक्त होकर अर्थ की भूमि पर सपाटता रखती है तो वही दूसरी ओर राम की शक्तिपूजा में कथा आधुनिकता से युक्त होकर अर्थ की कई भूमियों को स्पर्श करती है। इसके साथ साथ कवि निराला ने इसमें युगीन-चेतना व आत्मसंघर्ष का मनोवैज्ञानिक धरातल पर बड़ा ही प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया है।[11]

निराला बाल्यावस्था से लेकर युवाववस्था तक बंगाल में ही रहे और बंगाल में ही सबसे अधिक शक्ति का रूप दुर्गा की पूजा होती है। उस समय शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार भारत देश के राजनीतज्ञों , साहित्यकारों और आम जनता पर कड़े प्रहार कर रही थी। ऐसे में निराला ने जहां एक ओर रामकथा के इस अंश को अपनी कविता का आधार बना कर उस निराश हताश जनता में नई चेतना पैदा करने का प्रयास किया और अपनी युगीन परिस्थितियों से लड़ने का साहस भी दिया।[12]

यह कविता कथात्मक ढंग से शुरू होती है और इसमें घटनाओं का विन्यास इस ढंग से किया गया है कि वे बहुत कुछ नाटकीय हो गई हैं। इस कविता का वर्णन इतना सजीव है कि लगता है आँखों के सामने कोई त्रासदी प्रस्तुत की जा रही है।[13]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 8, August 2019

परिणाम

इस कविता का मुख्य विषय सीता की मुक्ति है राम-रावण का युद्ध नहीं। इसलिए निराला युद्ध का वर्णन समाप्त कर यथाशीघ्र सीता की मुक्ति की समस्या पर आ जाते हैं।

राम की शक्तिपूजा का एक अंश-

रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा
अमर रह गया राम-रावण का अपराजेय समर।
आज का तीक्ष्ण शरविधृतक्षिप्रकर, वेगप्रखर,
शतशेल सम्वरणशील, नील नभगर्जित स्वर,
प्रतिपल परिवर्तित व्यूह भेद कौशल समूह
राक्षस विरुद्ध प्रत्यूह, क्रुद्ध कपि विषम हूह,
विच्छुरित वह्नि राजीवनयन हतलक्ष्य बाण,
लोहित लोचन रावण मदमोचन महीयान,
राघव लाघव रावण वारणगत युग्म प्रहर,
उद्धत लंकापति मर्दित कपि दलबल विस्तर,
अनिमेष राम विश्वजिद्दिव्य शरभंग भाव,
विद्धांगबद्ध कोदण्ड मुष्टि खर रुधिर स्राव,
रावण प्रहार दुर्वार विकल वानर दलबल,
मुर्छित सुग्रीवांगद भीषण गवाक्ष गय नल,
वारित सौमित्र भल्लपति अगणित मल्ल रोध,
गर्जित प्रलयाब्धि क्षुब्ध हनुमत् केवल प्रबोध,
उद्गीरित वह्नि भीम पर्वत कपि चतुःप्रहर,
जानकी भीरू उर आशा भर, रावण सम्वर।
लौटे युग दल। राक्षस पदतल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार बार आकाश विकल।
वानर वाहिनी खिन्न, लख निज पति चरणचिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविरदल ज्यों विभिन्न।

'राम की शक्तिपूजा' की कुछ अन्तिम पंक्तियाँ देखिए-

"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम !"
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वरवन्दन कर।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 8, August 2019

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।[14]

निष्कर्ष

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (Suryakant Tripathi Nirala) को 'महाप्राण' भी कहा जाता है. उनकी कविता 'राम की शक्ति पूजा' हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है. खड़ी बोली की इस लंबी कविता में रामायण की कथा बताई गई. इसमें खासकर राम और रावण के भीषण युद्ध का वर्णन है.'राम की शक्ति पूजा' (Ram ki Shakti Puja) काव्य को निराला जी ने 23 अक्टूबर 1936 में पूरा किया था. इलाहाबाद से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था.'राम की शक्ति पूजा' कविता 312 पंक्तियों की एक लम्बी कविता है. इसमें 'महाप्राण' के स्वरचित छंद 'शक्ति पूजा' का प्रयोग किया गया है. इस कविता में कवि ने राम को एक साधारण मानव के धरातल पर खड़ा किया है, जो थकता भी है, टूटता भी है और उसके मन में जय एवं पराजय का भीषण द्वन्द्व भी चलता है. राम की शक्ति पूजा कविता में निहित कवि सूर्य कांत त्रिपाठी निराला ने कविता टीम की मूल भावना भगवान राम के प्रति प्रेम एवं समर्पण को दी है। इस कविता में भगवान राम के चरित्र और उनके कर्मों का बखूबी वर्णन मिलता है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा इस कविता में कवि के भगवान राम के प्रति प्रेम की भावना निहित है।[14]

संदर्भ

1. 'निराला', सूर्यकान्त त्रिपाठी; 'Nirala', S.T. (२०१४). राम की शक्ति पूजा (Hindi Poetry): Ram Ki Shakti Pooja(hindi poetry). Bhartiya Sahitya Inc. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-61301-456-1. मूल से 23 फ़रवरी 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २०१८-०२-२३.
2. निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-२००२, पृष्ठ-१७ एवं ४४३. (पृष्ठ-१७ पर निराला की जन्मतिथि के संदर्भ में अंग्रेजी तारीख देने के क्रम में मुद्रण-त्रुटि से २१ फरवरी के बदले २९ फरवरी मुद्रित हो गया है जिसका स्पष्टीकरण संवत् एवं तिथि के अनुसार अंग्रेजी तारीख बनाने के अतिरिक्त इसी पुस्तक के पृष्ठ संख्या-४४३ पर उल्लिखित तथ्यों के अनुसार भी आसानी से हो जाता है। पृष्ठ संख्या-४४३ पर निराला के जन्म के संदर्भ में पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात् उनकी उक्त जन्मतिथि निर्धारित की गयी है। अतः किन्ही व्यक्ति को पूर्वाग्रहवश किसी अन्य तिथि को निराला की जन्मतिथि मानकर स्वयं या अन्य लोगों को भ्रमित करने की दिशा में कदम नहीं बढ़ाना चाहिए।)
3. ↑ "स्पैनिश फ्लू यानी जब मौत के तांडव ने दिया हिन्दी के महान कवि को जन्म".
4. ↑ "निराला जयंती". ऋषभ. मूल से 27 मई 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १० दिसम्बर २००८. ↑ "How literature has helped us make sense of pandemics".
5. ↑ "References to death and disease in Hindi literature".
6. ↑ हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, सं॰ धीरेन्द्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण-२०११, पृष्ठ-६५१.
7. ↑ निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ॰-39-40.
8. ↑ निराला रचनावली, खण्ड-1, सं॰-नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-1998, पृ॰-19.
9. ↑ निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ॰-60-61 तथा पृ॰-440-441.
10. ↑ निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृ॰-42.
11. ↑ निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृ॰-20.
12. ↑ निराला रचनावली, खण्ड-5, पूर्ववत्, पृ॰-14.
13. ↑ निराला रचनावली, खण्ड-7, पूर्ववत्, पृ॰-15.
14. ↑ निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृष्ठ-16.